अध्याय : पांच

पुरस्कृत महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में भाषा एवं शैली का अध्ययन

5.1 भाषा

भाषा की सामान्य परिभाषा देते हुए 'धीरेन्द्र वर्मा' लिखते हैं कि - "जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को भाषा कहते हैं|"[1] भाषा भाव अभिव्यक्त करने का एक ऐसा साधन है जो मनुष्य को अन्य जीवों से न सिर्फ अलग करता है बल्कि सशक्त और प्रबल भी बनाता है| भाषा एक तरह का अनुशासन है, जो व्यक्ति के विचार और आचरण को समृद्ध करता है| ऐसे में जब हम साहित्य की बात करते हैं, तो यहाँ भाषा की सबसे सुन्दर और कलात्मक प्रक्रिया सामने आती है| अतः साहित्यिक लेखन कार्य में भाषा प्रमुख तत्वों में से एक है| लेखन कार्य के क्षेत्र में भाषा लेखक के कौशल का एक प्रमाण भी माना गया है| क्योंकि भाषा ही है जो लेखक को उसके पाठक वर्ग से जोड़ती है| कृष्णा सोबती लिखती हैं कि - "आपकी भाषा के साथ गहरे में जुड़ा है आपका व्यक्तित्व, आपकी आत्मा के संस्कार, आपका भावनात्मक और रोजमर्रा का संसार, जीवन में आपके लगाव, आस्थाएँ, मूल्य और समूची जीवन-दृष्टि जो आपके साहित्य की कसौटी है|"[2]

पुरस्कृत पाँचों लेखिकाओं की भाषा अपने-अपने लेखन कौशल को प्रदर्शित करता है| हर लेखक की लेखन कला उनके परिवेश से और प्रशिक्षण से प्रभावित होती है, जाहिर सी बात है कि इन लेखिकाओं के भी लेखन में यह तत्व मौजूद होंगे| आगे इनके लेखन में प्रयुक्त भाषा संरचना के इसी रूप को दिखाने का प्रयास किया गया है| कृष्णा सोबती के लेखन में उनके परिवेश की झलक को बखूबी देखा जाता रहा है| कृष्णा जी अपने लेखन में देशीपन के लिए जानी जाती रही हैं| इनका यह कौशल सामान्य पाठक वर्ग को संबोधित करता है, ताकि पाठक खुद को उस समय और परिवेश से जस का तस जोड़ सकें| इस संबंध में स्वयं कृष्णाजी लिखती हैं कि - "जिस भाषा

को आप जीते नहीं, जिन शब्दों से आपके लगाव नहीं सरोकार नहीं, जानकारी मात्र से आप उन्हें सृजन के स्तर पर शैली की बुनावट में सँजो नहीं सकते| उन्हें फूहड़पन से सजा भी लें| अर्थ और सौंदर्य के बिना शब्द की नुमाइश भी बेमानी होगी|”[3] कृष्णाजी के लेखन में जब इनके पुरस्कृत उपन्यास जिंदगीनामा की बात करते हैं तो यह गद्‌य अपने परिवेश की भाषिक खुशबू से सराबोर अर्थात्‌ पंजाबीपन से भरा हुआ है| नासिरा शर्मा के पुरस्कृत उपन्यास ‘पारिजात’ में उर्दू, अंग्रेजी और उस जगह की क्षेत्रीयता की झलक अवधी के रूप में हमें देखने को मिलती है| ‘कलिकथा वाया बाई पास’ में सामान्य हिंदी में बंगाली और मारवाड़ी बोली की खुशबू का आनंद लिया जा सकता है| ‘मिलजुल मन’ में लेखिका ने उर्दू की तासीर(गर्माहट) को बड़े ही सहज भाव से उठाया है, साथ ही आधुनिक समय के चलन अंग्रेजी के खुमार को भी सहजता से शामिल करते हुए दिखाया है| ‘नाला सोपारा’ में चित्रा जी ने समय के नब्ज को पकड़ते हुए लोगों के भाषा के प्रति रुझान को समझते हुए अपने लेखन में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है| इन लेखिकाओं की कलम की कारीगरी अर्थात्‌ भाषिक संरचना (शब्द, वाक्य, प्रतीक, मुहावरे, लोकोक्ति, काव्य/गीत) के यथार्थ रूप को आगे हम उदाहरण के तौर पर देख सकेंगे|

5.1.1 शब्दगत एवं वाक्यगत विश्लेषण

लिपि के आविष्कार से पहले मानव के भाव सम्प्रेषण का आधार भी अन्य जीवों की तरह ही था| धीरे-धीरे मनुष्य ने अपने सम्प्रेषण के माध्यम को विकसित कर चित्र शैली की खोज कर भाव को व्यक्त करना सीखा| फिर यह शैली धीरे-धीरे और विकसित हुई जिसके पश्चात्‌ आज हम भाषा के सशक्त रूप को भली-भांति देख सकते हैं| अतः भाषा लिपि और ध्वनि से मिलकर बने शब्दों का एक ऐसा जाल है जिससे समान अर्थ की प्रतीति या अभिव्यक्ति होती है| साहित्यिक लेखन रचनाकार के विशेष व्यक्तित्व को दर्शाता है जो सरल से क्लिष्ट के रूप में समयानुसार व्यक्त होता है| लेखकों के लेखन की विशिष्टता का प्रकटीकरण उनके लेखन में प्रयुक्त जीवंत शब्दों के प्रयोग के द्‌वारा होता है| लेखक का शब्दों से संबंध को लेकर लेखिका ‘कृष्णा सोबती’ लिखतीं हैं

- “लेखक लगातार शब्दों की संगत, सोहबत में रहता है| शब्दों की मदद से ही वह अपनी रचना को रंग-रूप देता है| मानवीय भावनाओं का अंकन करता है| अंतरमन की निगूढ़तम आहटों का विश्लेषण करता है| ...हर शब्द का एक जिस्म, एक रूह, एक पोशाक होती है| शब्द चूना, गारा या ईंटें नहीं हैं कि जिन्हें आप चुनते जाएँ और इमारत उठती जाए| शब्दों की टकराहट ही विचार को, चिंतन को जन्म देती है| किसी भी अच्छे लेखक के, शब्दों से केवल सरसरी संबंध ही नहीं होते| उनकी ध्वनि, लय, अर्थ को वहन कर सकने की क्षमता, बारीकी और भाषायी मांसलता सब रंगों में वह उसे आत्मसात करता है|”[4] ऐसे ही जीवंत शब्दों और सामान्य बोलचाल की भाषा लगभग सभी लेखिकों के लेखन की कुशलता में देखी जाती रही है| सामान्य बोलचाल की जब हम बात करते हैं तो इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि एक भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी सामान्य है| एक भाषा में दूसरे भाषा के शब्दों का आदान-प्रदान सामाजिक समरसता को भी दर्शाता है| इस प्रकार से इन लेखिकाओं ने अपने लेखन में हिंदी से इतर अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग बेझिझक किया है| दरअसल साहित्य समाज का दर्पण है कहने का एक आशय यहाँ स्पष्ट रूप से देख सकते हैं| भाषा के बारे में एक कहावत काफी प्रचलित भी है कि ‘तीन कोस पे पानी बदले दो कोस पे वाणी’| अतः इन दोनों संबंधों से यह स्पष्ट होता है कि शब्दों का मिश्रण साहित्य को सशक्त और पूर्ण बनाता है| यह मिश्रण लेखक के लेखन में प्रतिबिंबित होता रहता है| आगे सभी लेखिकाओं के उपन्यासों में विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्दों एवं वाक्य के प्रयोग को दिखाया गया है|

जिंदगीनामा में प्रयुक्त हिंदीतर शब्दों का प्रयोग

पंजाबी का प्रयोग- गुरुमुखी का अर्थ है गुरुओं के मुख से कही गई| पंजाबी इसी लिपि में लिखी जानेवाली भारतीय भाषा है| पंजाबी हिंदी के काफी निकट भाषाओँ में गिनी जाती है| इसका पहला कारण इसकी लिपि है और दूसरा अर्थ और ध्वनि के स्तर की समानता| पंजाबी और हिंदी के संबंध को दर्शाते हुए ‘धीरेन्द्र वर्मा’ लिखते हैं कि - “हिंदी और पंजाबी का संबंध दो बहनों का संबंध

है|”[5] 'जिंदगीनामा' एक आंचलिक उपन्यास है जिसमें पंजाबी परिवेश की स्थानीय भाषा का आना स्वाभाविक है| ऐसे में उपन्यास में पंजाबी शब्दों की अधिकता शोध अध्ययन के दौरान पढ़ने के बाद देखी गयी है जो आगे वर्णित है-

कुच्छड़, वड्डे, धौल-धप्पा, लिशकन, लरिकत, पुत्तर, लिशकारा, चन्न, तिखूंटा, ग्तावे, बिलोने, कौल, खलासी, -सैनत, इलाही, दिलजोइयाँ, बहूटी, तरीमत, लिशकन, लरिकत, सलामत, धौल-धप्पा, पुश्चैनी, पक्ख, पौड़ियाँ, वेहड़े, गड्वे, कबीलरानी, थापडी, बांकड़ी, पट्ठ, कूंई, अग्गड़, पिच्छड, रुख|

उर्दू का प्रयोग

“उर्दू खड़ी बोली का ही वह आधुनिक या साहित्यिक रूप है, जो फारसी लिपि में लिखा जाता है और जिसमें फारसी-अरबी शब्दों का बाहुल्य होता है|”[6] भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से हिंदी और उर्दू एक ही है लेकिन साहित्यिक दृष्टि से ये दोनों अलग| उर्दू के सन्दर्भ में आगे धीरेन्द्र वर्मा पुनः कहते हैं कि - “उर्दू को पढ़ते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यह खास भारत की भाषा है और उस सभ्यता की निशानी है, जो मुसलमानों के हिंदुस्तान में बसने और हिन्दुओं से भाईचारा रखकर सम्मिलित हो जाने से उत्पन्न हुई है|”[7] उर्दू सामान्यतः अरब से आये मुस्लिम शासकों की देन है| जो अब हिंदी में रच बस गयी है| अतः लेखिकाओं के उपन्यास में भाषायी भाईचारा को सामान्य तौर पर देखा गया है| आगे उपन्यासों में प्रयुक्त उर्दू शब्द को हम उदाहरण के रूप में देख सकते हैं|

'जिंदगीनामा' में प्रयुक्त उर्दू के शब्द-

फर्श, इंतजार, लाड-प्यार, याद, नज़र, खुशबु, ख़बर, दुश्मन, कब्र, चेहरा|

अंग्रेजी का प्रयोग

भारत में भाषाओँ के आदान-प्रदान का एक मुख्य कारण यहाँ अन्य राष्ट्रों से आये शासकों द्वारा किये गए शासन को जाता है| हिंदी में अरबी-फारसी, उर्दू और अंग्रेजी इसका ही उदहारण है| अंग्रेजों द्वारा किये गए लम्बे समय तक के शासन ने आज तक अपनी भाषा का दबदबा कायम रखा है| आज अंग्रेजी का प्रचलन हर क्षेत्र के लिए अनिवार्य सा हो गया है ऐसे में अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करना अभी के समय में सामान्य हो गया है| आज का आधुनिक दौर न सिर्फ अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग तक सीमित है बल्कि इस भाषा का वैश्विक प्रचलन बड़े स्तर पर देखा जा सकता है| भूमंडलीकरण के प्रभाव को समाज के हर क्षेत्र में देखा गया है अंग्रेजी भाषा भी इसी का परिणाम है| अतः आज के समय में लोगों के बीच अंग्रेजी का प्रयोग काफी सहज पूर्वक होने लगा है जो लेखिकाओं के लेखन में भी देखा जा गया है|

'कलिकथा वाया बाइपास' में प्रयुक्त हिंदीतर शब्द और वाक्य-

अंग्रेजी शब्द-

"रेस्तरां, बाइपास, सर्जरी, प्लास्टिक, ऑपरेशन, टेबुल, वार्ड, स्ट्रेचर, फर्नीचर, स्टील, पोस्टर, रेट, सेंट्रल एवेन्यु, स्ट्रीट, स्क्वायर, राइटर्स बिल्डिंग, ग्रेट ग्रैंड फादर, टेररिस्ट, लिफ्ट, डिस्टेम्पर, कटिंग, मार्बल,

वाक्य - 'आई ऍम द मोनार्क ऑफ ऑल आई सर्वे', .माई डियर| 'नाइंटीन हंड्रेड एंड फोर्टी', आफ्टर ट्वेंटी इयर्स', 'डू यू थिंक यू ओन दिस रोड', 'इट विल गो अप योर हेड', इट्स गुड तो सी', इट वाज अनफोर्चुनेट', हाउ विल आई नो, अंटिल यू टेल मि?', 'यू फिल गिल्टी ऑल द टाइम', 'आई कुड किल हिम', 'इंडिया इज माई कंट्री', 'आई हेव नथिंग टो टेल यू', 'टू हेल विद योर आइडिया', 'आर यू अशेम्ड ऑफ मी', 'वाय आर यू हिटिंग हिम'|

संस्कृत का प्रयोग : "संस्कृत शब्द का अर्थ संस्कार की हुई, मांजी हुई, परिष्कृत समझना चाहिए|"[8] संस्कृत से आर्य परिवार की हिंदी-ईरानी शाखा के भारतीय अंश का प्राचीन रूप को भी देखा जा सकता है| सभी भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत का मिला रूप आज भी कहीं-कहीं अन्य भाषाओं में देखा जा सकता है| भाषा में आये परिवर्तन समय सापेक्ष होता है अर्थात् ये बदलाव समय की अपनी मांग की वजह से होती है| वैसे ही संस्कृत को भी आज महज जननी के तौर पर कभी-कभी याद कर लिया जाता है| संस्कृत का कुछ अंश आज हिंदी बोलने-पढ़ने वालों में कुछ हद तक जिन्दा हैं| जिस तरह ये शब्द आज समाज में व्याप्त हैं, साहित्य में भी उसी रूप में जिन्दा है|

कलिकथा में प्रयुक्त संस्कृत के शब्द-

संज्ञा, रहस्य, विशाल, संप्रदाय, सौहार्द, कृतज्ञता, प्रवाह, आत्मविश्वास, आक्रमण|

'कलिकथा वाया बाइपास' में प्रयुक्त बांग्ला, और राजस्थानी

"जदी निर्वासने पाठाबेई कलिकाता"|

"कलकत्ता सै जाना तो इस जहान सै जाना सै जी|"

'मिलजुल मन' में प्रयुक्त हिंदीत्तर शब्द और वाक्य

अंग्रेजी शब्द-

डिप्रेशन, ग्रेट, होटल, लाउंज, डबल, आर्डर, लाइटर, कंपनी, इन्फिनिटी, लेम एक्सयूज! (लंगड़ा बहाना), सॉरी, मैंटली, चैलेंज्ड, करियर, ऑपशन, कॉलेज, डॉक्टर, प्रेक्टिस, शटअप, रिफ्यूजियों, फुटपाथी, फ़ैशन, स्कर्ट-ब्लाउज़,

उर्दू शब्द-

मुलाज़िम, गुफ़्तगू, ख़ुतूत, खिलाफ़, दास्ताने-इश्क़, खालिस, मुलाकात, ज़िन्दगी, मुहब्बत, बख्शी, उम्दा, यकीन, इंतकाल, नेस्तनाबूद, नाज़ुकमिज़ाज, नाज़नीन, ख़िदमतगार, सशख्सियत, मुखतलिफ़, बेनाज़ुकख्याल, गैरमुतास्सिर, गर्दिश, सिफ़र,

'पारिजात' में प्रयुक्त हिंदीतर शब्द और वाक्य

अंग्रेजी शब्द-

स्टेशन, टी-स्टॉल, सॉफ्ट-ड्रिंक, हस्बैंड, शोरुम, डिटेल, एपिसोड, डिप्रेस, अपसेट, पेपरवेट, इनवर्टर, मूड, ऑब्जेक्शन, इंटरनेश्नल मार्किट, रिटायरमेंट, ब्रेसलेट, थर्मस, कस्टडी, पासपोर्ट, प्लानिंग, एप्रन, ब्लडप्रेशर, सेमिनार, चैप्टर, री-राइट, व्हिस्की, ब्रेकफास्ट, विंडो शॉपिंग, दैट्स ऑल राइट, ब्रीफकेस, नेपकिन, यू आर इम्पॉसिबल, क्रिमनल, सिगरेट, वाट अ सरप्राइज,

उर्दू शब्द-

वहशत, नस्ल, अमरूद, ज़रखेज़, ज़मीन, नाज़ुक, ख़ानदानी, शागिर्द, गुस्ताख़ी, बेशकीमती, सफ़हा, बेमकसद, नफ़ासत, अल्फ़ाज़, शहादत, अज़ादारी, मखलूक, बेमुरव्वत, तजुर्बे, महफ़ूज़, हिफ़ाज़त, ख़िदमत, मिज़ाज, बेदाग़, ख़्वाब, जुर्म, ज़ेवर, कागज़ात, इसरार,

अवधी वाक्य -

"कुछऊ खरीदे का होय तो ले लेव बाबूजी ! हम दो-चार मिल्ट रुक जावेंगे" |

"कस भैया ! बहुत दिनों बाद चक्कर लगाए हो, पढाई मा मस्त रहे का?"

"कउन बँगले में चलबो बाबू !"

"अब पुरनका कपड़ा धोए का देती हैं| कैसे संभाले हम बीबी ओका?"

'नाला सोपारा' में प्रयुक्त हिंदीत्तर शब्द और वाक्य

अंग्रेजी शब्द-

डबल, मैनेजर, मेट्रो स्टेशन, पोस्ट बॉक्स, ग्रीटिंगकार्ड, मेटरनिटी, सोनोग्राफिस्ट, अल्ट्रासाउंड, जीनियस, ड्रेसिंग टेबल, इंटरनेट, राइट टू एजुकेशन, सर्टिफिकेट, बिल्डिंग, कैमल कलर, स्विफ्ट प्रोग्राम, रिफ्यूजी, सोसाइटी, रेस्टोरेंट, अपार्टमेंट,

गुजराती वाक्य -

"मारे स्कूल जऊ छे"

"एक बांदरो झाड़ पर बेठी ने चणा खातो तो एक चणा झाड़नी पिराणा मां फंसी गयो..."

"तू ना पाड़ेगी न तो वांदा नई|"

5.1.2 प्रतीक

प्रतीक का प्रयोग भाषा को और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है| प्रतीक के माध्यम से विचार एवं भाव अधिक सुग्राह्य और सुव्यवस्थित तरीके से अंकित किया जाता है| शांतिस्वरूप गुप्त के अनुसार - "प्रतीक के प्रयोग के द्वारा लेखक अगणित भावों और विचारों को समेट लेता है, जो सामान्य भाषा द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो सकता उसका निर्देशन करता है|"[9] वहीं शुक्ल जी के अनुसार "प्रतीक सर्वदा अपने से इतर संकेत देता है| समुद्र चातक आदि की अर्थवत्ता स्वयं इनमें नहीं है, बल्कि इनके द्वारा संकेतित विशिष्ट अर्थ में है| ...साहित्यिक प्रतीक के संबंध में पाठक और प्रयोक्ता के बीच मतैक्य नहीं भी हो सकता है, प्रायः नहीं होता|"[10] अतः प्रतीक लेखन कौशल को जितना पुष्ट करती है उतना ही पाठक वर्ग को और परिपक्व कर ऊपर उठाती है|

'जिंदगीनामा' में प्रयुक्त प्रतीक- "चल तेरे पुत्तर जन्मने से पहले ही मुँह मीठा कर लेते है|"[11] यह पंक्ति पितृसत्तात्मक समाज का प्रतीक है, जो सिर्फ पुत्र की कामना करता है| उपन्यास में जितनी भी जगह किसी स्त्री को दुआ दी गई है सिर्फ पुत्र की कामना का आशीर्वाद दिया गया है, जो कि जड़ मानसिकता का प्रतीक है| "शाहों के घर गहमा-गहमी में मानो एक संग कई नच्छत्रों का आगमन हो गया|"[12] यहाँ 'एक संग कई नच्छत्रों का आगमन' असीम खुशियों का प्रतीक है|

'कलिकथा : वाया बाइपास' में प्रयुक्त प्रतीक- 'कलिकथा वाया बाइपास' उपन्यास का शीर्षक ही एक प्रतीक के तौर पर लिया गया है, जहाँ कलि-कथा से कलयुग एवं बाइपास का आशय बगल का रास्ता अपनाने से है| पूरा उपन्यास प्रतीकों के प्रयोग से भरा हुआ है| उपन्यास के केन्द्रीय पात्र किशोर बाबू कलयुग के दुविधाग्रस्त व्यक्ति और मारवाड़ी समाज के प्रतीक के रूप में दिखते हैं तो वहीं शांतनु सुभाष चन्द्र बोस का, अमोलक गाँधी जी के विचारों के प्रतीक के रूप में दिखलाया गया है| "बचपन में उन्होंने गिगिया बुआ को आत्मा बुलाते देखा है|"[13] इस प्रसंग का प्रयोग अन्धविश्वास का प्रतीक के तौर पर किया गया है| जिसका आशय है निष्प्रयोजन कहीं भी उपस्थित होकर विघ्न या समस्या पैदा करना| "कलकत्ता शहर के हिन्दू और मुस्लिम इलाके के बीच में जालीदार तार और कबाड़ रख 'नो मैन्स लैंड' बनाकर 'हिंदुस्तान' और 'पाकिस्तान' बन गए थे|"[14] उपन्यास में यह पंक्ति सामाजिक अलगाव को दर्शाती है| "द ग्रेट कैलकटा किलिंग"[15] नामक अध्याय दंगे के इतिहास का प्रतीक है| "ये भेड़िये दिन-ब-दिन खूंखार हो रहे हैं- मुस्लिम भेड़िये हों या हिंदू|"[16] यहाँ भेड़िया शब्द पाशविकता का प्रतीक है|

'मिलजुल मन' में प्रतीक- "जात से बनिया हूँ| जनता हूँ, दलाली से ज्यादा हुनरमंद और मुश्किल पेशा, दूसरा नहीं है|"[17] यहाँ बनिया समाज चातुर्य एवं ठगी का प्रतीक है| "छरहरी काया मानी फुर्तीली और मुस्तैद, यानी मर्द के लिए ख़तरनाक|"[18] इस तरह की सोच लोगों की रूढ़ मानसिकता का प्रतीक है| "समाज ने लड़कियों को लेडी डॉक्टर बनने की छूट काफ़ी पहले दे दी थी|"[19] यहाँ 'लेडी डॉक्टर बनने की छूट' पितृसत्तात्मक सोच का प्रतीक है| "थोड़ा बहुत सीख लो, लड़कीजात हो

बेटी; कितना भी पढ़-लिख लो, काम यही आएगा|"[20] "मुंह पर खरोंच भी हैं, मैंने कहा| सुनते ही गुल ने बेतहाशा रोना शुरू कर दिया| बोली अब मेरा क्या होगा?"[21] चेहरे को लेकर इतनी सजगता हीनभाव का प्रतीक है| "हम लोग तो नौकर भी गोरा रखना पसंद करते हैं, मीठी हँसी हँसकर कहा|"[22] इस तरह की सोच रंगभेद के प्रतीक को दर्शाता है|

'पारिजात' उपन्यास में प्रतीक- "हमारा साथ नहीं रहा तो क्या, गुड़हल तो फूल रहा है|"[23] यहाँ गुड़हल विपरीत परिस्थिति में भी जीवन जीने की प्रेरणा का प्रतीक है| यह एक मजबूत व्यक्तित्व को दर्शाता है| "पुराने दोस्तों को वह बताना चाहती थी कि टूटा पुल फिर से मरम्मत के बाद चालू हो गया है|"[24] यहाँ 'टूटे पुल की मरम्मत' रुही के जीवन में फिर से आई खुशी का प्रतीक है| "रोहन बरामदे में काफ़ी देर से बैठा अपने अंदर फैली ख़ामोशी को सुन रहा था| घटा सी गहरी उसके दिल पर भी छाई थी, मगर वह बरसने को तैयार न थी|"[25] यह पंक्ति रोहन के जीवन के खालीपन और वेदना का प्रतीक के तौर पर दिखाया है|

'**नाला सोपारा' में प्रतीक-** "टूटे सिलसिले को सुई-धागे से नहीं सिला जा सकता है|"[26] "दरवाजों पर ही काठ के पल्ले नहीं जुड़े हुए हैं| ह्रदय भी कठ करेज हो गए हैं|"[27] यहाँ ह्रदय का काठ होना संवेदनशून्य होने का प्रतीक है| "अपना सिक्का खोटा तो मान लेने में हर्ज कैसा?"[28] "इस पिटारे में एक तू ही नागिन नहीं है|"[29] यहाँ 'नागिन' कुटिलता और क्रूरता का प्रतीक है|

5.1.3 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरा एक ऐसे वाक्यांश को कहा जाता है, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर एक विशिष्ट अर्थ प्रकट करे| अर्थात् मुहावरा एक ऐसे वाक्य का अंश होते हैं जो रूढ़ अर्थ देता है| लेखन में मुहावरों के महत्त्व को बताते हुए बाबू गुलाबराय लिखते लिखते हैं - "मुहावरों में भाषा की लक्षणा शक्ति के प्रयोग से कुछ चमत्कार आ जाता है और अपनी कुछ बात को एक बंधी बंधायी प्रचलित शब्दावली के भीतर ले आने का सामाजिक सुख मिलता है| इन मुहावरों में चित्र से रहते हैं जो बात को शीघ्र ही हृदयंगम कर देता है|"[30]

लोक+उक्ति दो शब्दों से बना एक ऐसा शब्द जो समाज में प्रचलित व्यापक लोक अनुभव पर आधारित होता है लोकोक्ति कहलाता है| लोकोक्ति अपने आप में एक पूर्ण अर्थ देता है| लोकोक्ति के बारे में धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं कि - "यह ग्रामीण जनता का नीतिशास्त्र है लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान के घनीभूत रत्न है, जिनमें बुद्धि और अनुभव की किरणें फूटनेवाली ज्योति प्राप्त होती है| ....लोकोक्ति लोकमानस के द्वारा अर्थ गौरव की रक्षा करता है और मनोरंजन प्राप्त करता है| यह बुद्धि परीक्षा का भी साधन है|"[31]

'जिंदगीनामा' अपनी आंचलिकता के लिए जाना जाता है| इसमें लोक जीवन के साथ उनका गहरा लगाव हमें देखने को मिलता है| जब भी रचनाकार अंचल परिवेश को लेकर कथा गढ़ता है तो उसमें लोकोक्तियों का प्रयोग सहज ही होता है| 'जिंदगीनामा' में पंजाब के ग्रामीण परिवेश को दिखाया गया है तो जाहिर सी बात है कथा में उस परिवेश में प्रयुक्त की जाने वाली लोकोक्ति का प्रयोग लेखिका ने किया होगा| ऐसे ही अन्य सभी उपन्यासों में प्रयुक्त परिवेश सापेक्ष सुन्दर और सार्थक लोकोक्तियों एवं मुहावरों का आगे उदाहरण के तौर पर वर्णन किया गया है-

'जिंदगीनामा' में प्रयुक्त लोकोक्तियां -

"हवालातों में गीदड़ नहीं बद्धि याड जानें है|"[32]

“लड़ाई पड़ी शरीका और मालिक बने गवाह!”[33]

“न काँटोंवाली बाड चंगी और न बाड वाले कांटे|”[34]

“खेरों से बौर पड़ना|”[35]

“भरी भराई चाटियां हल हल न पड़ेगी|”[36]

“बंदा गोला बनके कमाए और राजा बनके खाए|”[37]

‘कलिकथा वाया बाइपास’ में प्रयुक्त लोकोक्तियां -

. “रुपयो होवे रोकड़ो, सोरो आवै सांस| संपत होय तो घर भलो, नहीं भलो परदेस’|”[38]

. “चांदी बरगे(जैसे) भात, सोने बरगी दाल, गिलौरी बरगे फलके (रोटी)|”[39]

. “मोर नाचता है, पर अपने पैरों को देखकर रो पड़ता है|”[40]

. “क्या तुमने इस घर को हरि घोष का गोला (गोदाम) समझ रखा है, जो मांगने चले आए ; रूपए की जरुरत हो भाई, तो किसी गौरी सेन के पास जाओ|”[41]

. “दाल में जरूर कुछ काला है|”[42]

. “सुखिया सब संसार है, खावे और सोवे| दुखिया दास कबीर है, जागे और रोवे|”[43]

‘कलिकथा : वाया बाइपास’ में प्रयुक्त मुहावरे -

. “तह तक जाना|”[44]

. “फक पड़ जाना|”[45]

. “गड़े मुर्दे उखाड़ना|”[46]

. “खून पानी होना|”[47]

. “टस-से-मस न होना|”[48]

. “पैरों तले धरती खिसकना|”[49]

‘मिलजुल मन’ में प्रयुक्त लोकोक्तियां -

“चौमासे के सावन-भादों जितने रोमानी, उतने छुतहा|”[50]

“बछिया के ताऊ हमीं सही|”[51]

“ताल पर सारस की मानिंद|”[52]

‘मिलजुल मन’ में प्रयुक्त मुहावरे-

“सावन के अंधे को हरा ही हरा दीखता है”[53]

“गुड़ गोबर कर दिया|”[54]

“प्रैक्टिस मेक वन परफैक्ट|”[55]

“सांप मर जाए और लाठी भी न टूटे|”[56]

“खिसियानी बिल्ली का खंबा नोचना|”[57]

“हम लिफ़ाफ़ा देख ख़त का मज़मून बतला सकते हैं|”[58]

“खंडहर बतला रहे थे, इमारत कभी बुलंद थी|”[59]

“बाल की खाल खीचना|”[60]

‘पारिजात’ उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरे -

“दिल फटे दूध की तरह हो रहा था|”[61]

“पौ फटने वाली थी|”[62]

“हारा जुआरी क्या बोले !”[63]

“इनकी आँखों में सूअर का बाल होता है|”[64]

“दर्द अपनी ज़मीन से ही फूटता है|”[65]

‘नाला सोपारा’ में प्रयुक्त मुहावरे -

“फिर वही ढाक के तीन पात|”[66]

“कौवा चले हंस की चाल|”[67]

5.1.4 गीत / काव्य

कविता और गीत गद्‌य को और रोचक एवं प्रभावकारी बना देते हैं| कृष्णा सोबती जी के उपन्यास में ऐसा प्रयोग देखते ही बनता है| 'जिंदगीनामा' इनके ऐसे ही उपन्यासों में से एक है जिसमें गीत और कविता का प्रयोग जगह-जगह दिखाई देता है| मंजूर एहतेशाम लिखते हैं - "कृष्णा जी के गद्‌य में वही आनंद है जो कविता पढ़ने से मिलता है|"[68] 'जिंदगीनामा' उपन्यास एक लम्बी कविता से शुरू होता है| इसके बाद पूरे उपन्यास में लगभग कई तरह के गीत, सूक्ति, कवित्त, सुहाग, घोड़ी, वाणी, दोहा आदि को देखा जा सकता है| उदहारण के तौर पर उपन्यासों में वर्णित काव्य और लोक गीत निम्नलिखित है| -

कविता- "जेलहम और और चनाब

बहते रहेंगे इसी धरती पर|

लहराते रहेंगे

खुली-डुली हवाओं के झोंके

इसी धरती पर

इसी तरह|"[69]

दोहा- "चिड़ी चोंच भर ले गई नदी न घटयो नीर

दान दिए धन ना घटे कह गए भगत कबीर !"[70]

कवित्त- "गुणियों के सागर हैं

जात के उजागर हैं

भिखारी बादशाहों के

प्रभो के मिसारी हैं

सिंहों के रब्बाबी हैं

कव्वाल परीजादों के

हम डूम मालज़ादों के|”[71]

घोड़ी- “मेरे वीर का सेहरा आया

कोई माली गूँथ ले आया

उत्ते छत्र नबी का सोहवे

सालयात या अली|”[72]

सुहाग- “बीबी चन्नन दे ओले-ओले क्यों खड़ी

जी मैं खड़ी साँ बाबुल जी दे पास

बाबुल वर ढूढयो !”[73]

‘कलिकथा वाया बाइपास’ में प्रयुक्त गीत-

इस उपन्यास में किशोर बाबू द ग्रेट ग्रैंड फादर रामविलास बाबू के जीवन की कथा जो उनके बचपन से शुरू होती है उसकी चर्चा करते हैं जिसमें एक प्रसंग में रामविलास बाबू, डूंगर, नरसिंह, और नौरंग एक गीत गाते हैं, जो बारिश के पानी को लेकर गाया गया है|

“डेडरियो करे डरूं-डरूं (मेंढक बोलता है डर्र-डर्र)

पालर पानी भरूं भरूं (बादल का पानी भरूं-भरूं)

आधी रात री तलाई नेष्टेई नेष्टे (कितना? आधी रात तक तालाब छलकने लग जाए- इतना)|"[74]

उपन्यास में आगे 'नाइन्टी फोर्टी टू : अ लव स्टोरी' शीर्षक में सन इकतालीस के साल का अंतिम महीना आते-आते विश्वयुद्ध की विभीषिका ने लोगों को अपना शहर छोड़ने पर मजबूर कर दिया था| इसी दौरान किशोर बाबू को ललित भैया की शादी में सुने एक मारवाड़ी गीत के बोल याद आते हैं, जो प्रेम में विरह को दर्शाता है| किशोर बाबू के मामा की शादी के कुछ दिन बाद मामी रामगढ़ चली जाती है और मामा खुद कलकत्ते में रह जाते हैं जिसके बाद मामी के द्वारा यह लोकगीत कुछ ऐसे गाया गया है| जिसका आशय यह है कि बड़े मोल की मेहंदी है जो मेरे हाथ में रची है, और मेरा बन्नो दूर बसा हुआ है अब कौन देखेगा उसका हाथ|

"मेहंदी मोल की ऐ / ऐ जी मेंहदी राची म्हारे हाथ,

म्हारो बन्नो बस्यो है दूर, सहेली / कुण निरखे म्हारा हाथ?"[75]

'पारिजात' में प्रयुक्त गीत

'पारिजात' उपन्यास के एक प्रसंग में प्रहलाद दत्त, निखिल, प्रो. सोनकर, एवं मिश्रा जी इलाहाबादी अमरूद का बखान अपने-अपने अर्जित ज्ञान के मुताबिक कर रहे होते हैं, इसी क्रम में प्रो. सोनकर अमरूद की लोकप्रियता का गुणगान एक गीत के माध्यम से करते हैं| जिसमें एक स्त्री अपने साथी से उन तमाम वस्तु जिसके लिए एक स्त्री की प्रकृति जानी जाती है को दरकिनार कर अमरुद लाने को कहती है| लेखिका इसकी विशेषता का बखान अपने लेखन में कुछ इस तरह करती हैं -

"सुन मोर रजवा झुलनी न लेबै, बाला न लेबै

सुन मोर बलमा गहना न लेबे, गुरिया न लेबै

सुन मोर सजना लहँगा न चाही, ओढ़नी न चाही

लै आयो इलाहाबादी सफ़ेदा की डलिया|"[76]

'पारिजात' उपन्यास में रोहन अपनी माँ को उनकी बरसी पर याद करते हुए जब तकिये पर सर रगड़ता है तो उसे माँ की सीने की नरमी और खुशबू नहीं मिलती है| अंत में थक कर नींद की गोली खाकर सो जाता है| सोते हुए उसे लगा जैसे माँ उसके सर पर थपकी देकर उसे लोरी सुना रही है-

"चंदन का पलना है रेशम की डोरी...."[77]

लोरी हमारे समाज में चली आ रही परंपरा और संस्कृति की सोंधी महक को दर्शाती है| जिसे घर की औरतों द्वारा जिन्दा रखा गया है| छोटे बच्चों को सुलाने के लिए माँ के द्वारा गाया गया वह लोकगीत लोरी कहलाता है जो क्षेत्र विशेष पर आधारित होता है| लोक में व्याप्त इस गीत के बोल लोकगीत का हिस्सा है| धीरेन्द्र वर्मा 'लोरी' के बारे में लिखते हैं कि- "लोरियाँ लोकगीतों का ही एक अंग है और उनमें जबतक शब्द नहीं भरे जाते, तबतक केवल लय या ध्वनि लोरी नहीं कही जा सकती|"[78] 'नाला सोपारा' उपन्यास में छठे पत्र में अपनी बा के द्वारा मंजुल को सुनाये गये लोरी का जिक्र करता हुआ बिनोद कहता है कि जब तू अपने लाडले पोते से मिलेगी तो उसे सुनाना जैसे तू मंजुल को सुलाने के लिए उसकी कनपटी थपकाते हुए गाती थी|

"खम्मा वीरा ने जाऊ वारण, रेss लोल

एक तो सुहागी गगन चान्दलो, रेss लोल|"[79]

5.2 शैली

सामान्यतः लेखक के विचार को अभिव्यक्त करने के ढ़ंग को शैली कहा जाता है| धीरेन्द्र वर्मा अपनी किताब में प्रसिद्ध यूनानी रचनाकार 'प्लेटो' के मत को दर्शाते हुए लिखते है कि - "जब विचार को तात्त्विक रूपाकार दे दिया जाता है तो शैली का उदय होता है|"[80]

साथ ही 'धीरेन्द्र वर्मा' ने अपने साहित्य कोश में शैली को गुण बताते हुए इसे और स्पष्ट रूप में समझाने का प्रयास किया है| इस सन्दर्भ में वे लिखते हैं कि - "शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के लिए उन तरीकों का नाम है जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं|"[81]

कथ्य के दृष्टिकोण से शैली को परिभाषित करते हुए 'हेनरी मोरियर' लिखते हैं - "शैली किसी के भी होने का एक ढंग है|"[82] '(To us style is a disposition of existence, a way of being.)'

विषय-वस्तु के सन्दर्भ में शैली को व्याख्यायित करते हुए 'गेटे' लिखते हैं कि - "शैली रचना का वह उच्च और सक्रिय सिद्धांत है जिसके द्वारा लेखक अपने विषय की गहराई में उतर कर विषय के अंतस का उद्घाटन करता है|"[83] '(Style as a higher and active principle of composition by which the writer, penetrates and reveals the inner form of this subject.)'

शैली की वैयक्तिक विशेषता को रेखांकित करते हुए डॉ. जानसन लिखते हैं "हर व्यक्ति की अपनी शैली होती है|"[84] '(...any man has peculiar style.)'

'भोलानाथ तिवारी' अपनी पुस्तक 'शैली विज्ञान' में शैली के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतों का अध्ययन कर उसके व्यापकतम रूप को रेखांकित करते हुए लिखते हैं कि - "किसी भी कार्य को करने के विशिष्ट ढंग का नाम शैली है|"[85]

इस प्रकार ऊपर लिखी गयी परिभाषाओं से स्पष्ट है कि शैली अभिव्यक्ति के विशेष प्रकार से संबंध है| जिस प्रकार पद्य की अपनी एक शैली होती है वैसे ही गद्य की भी अपनी एक शैली है| अर्थात् कथा साहित्य में उपन्यास की भी अपनी एक अलग शैली है| भोलानाथ तिवारी शैली के भाषेतर आयाम को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि - "कथा कहने की अनेक शैलियाँ हैं| जैसे संस्मरण शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, आत्मकथात्मक शैली, जीवनी शैली, तथा सामान्य कथा शैली आदि-इत्यादि| कुछ लेखकों ने तो इसमें से किसी एक में ही प्रायः पूरा उपन्यास लिख डाला है... किन्तु काफी उपन्यास मिश्रित शैली में भी लिखे गए हैं, जिनमें यथा समय कई शैलियों का प्रयोग हुआ है| विभिन्न अनुपात में इनके मिश्रण से भी उपन्यास की कथानकी शैली प्रभावित होती है तथा अलग-अलग रूप ले लेती है|"[86]

प्रत्येक कथाकार अपनी विशिष्ट शैली के लिए जाना जाता है| शैली ही है जो इनके लेखन को अन्य लेखकों से अलग करता है| अतः हर कथाकार यह प्रयत्न करता है कि वो अपनी विशिष्ट शैली द्वारा लेखन में नवीनता एवं मौलिकता के साथ-साथ रोचकता भी दिखा सके| साथ ही लेखक अपनी शैली को लेकर सजग और अभ्यासरत भी रहते हैं, ताकि उनकी शैली पाठक वर्ग पर वो तमाम प्रभाव डाल सके जो लेखक अपने लेखन के माध्यम से व्यक्त करना चाहता है| कुछ प्रमुख शैलियाँ हैं जिसे लगभग सभी लेखक के लेखन में देखा गया है| जैसे कि वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, पत्रात्मक, पूर्वदीप्ति, व्यंग्यात्मक शैली| यहाँ मेरे शोध कार्य में लिए गए उपन्यासों की शैली को आगे उदाहरण स्वरूप दर्शाया जा रहा है|

5.2.1 वर्णनात्मक शैली

इस शैली का सभी उपन्यासों में सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता रहा है| ऐसा इसलिए क्योंकि इस शैली में दृश्य का वर्णन समग्रता के साथ किया जाता है| अर्थात् उपस्थित वातावरण में किसी

भी वस्तु, व्यक्ति, व स्थान का वर्णन उसकी संपूर्णता में किया जाता है साथ ही इसमें निबंध जैसा विवरण होता है| अतः इस तरह के प्रयुक्त प्रसंग को इसी शैली के अंतर्गत देखा जा सकता है| ‘बाबू गुलाबराय’ वर्णनात्मक शैली के संबंध में लिखते हैं कि - “वर्णनात्मक शैली देश के आयाम से सम्बद्ध होने के कारण वस्तु के स्थितिशील रूप के वर्णन में उपयोगी होती है|”[87]

गाँव को क्या गाँव बनाता है ‘जिंदगीनामा’ में लेखिका के द्वारा लिखे गए ऐसे कई प्रसंग के माध्यम से ग्रामीण परिवेश को समझा जा सकता है| कृष्णा जी उपन्यास में गाँव के कई सुन्दर चित्र प्रस्तुत की हैं जो गाँव के सामान्य जन-जीवन को दर्शाता है| आगे गाँव के परिवेश का सुन्दर रूप दिखाया गया है जिसमें लालाजी बच्चों को कहानी के माध्यम से सृष्टि के निर्माण की कथा सुना रहे है - “बच्चों, यह रूख हमारे सब रूखों से बड़ा था| इतना बड़ा कि गउओं और बल्दों के बड़े-बड़े झुंड इसके नीचे आ ढुके| इसी सृष्टि-रूख से भूलोक उपजा| यह पृथ्वी| धरती हमारी| फिर उपजीं चार दिशाएँ और फिर बना आकाश| जब यह सबकुछ स्थित हो गया तो फिर जन्मा अदिति को दक्ष| पीछे-पीछे इसके देवता जन्मने लगे|”[88]

इसी उपन्यास में गाँव के लोग जो फ़ौज में थे उनके द्वारा वर्तमान समय के शासन का वर्णन किया गया है| प्रसंग के माध्यम से छुट्टियों में गाँव वापस आये फौजी भाईयों के द्वारा अपनी-अपनी कंपनी पलटन की बात साझा करते हुए दिखाया गया है| आगे एक प्रसंग में जहाँदाद जी से काशीशाह अख़बार में छपी हकूमत कबाइलियों को काबू करने की कोशिश के बारे में पूछता है कि क्या वाकई में ऐसा हुआ| जिसका आगे वर्णन करते हुए जहाँदाद जी कुछ इस तरह करते हैं - “जी| सड़कें-छावनियाँ कई बिछाई-सजाई गई, ब्लोच कबाइली बाज़ नहीं आते| ....गालिबन यह उसी साल की बात है जब मियाँ पविन्दों का काफ़िला गोमल से होकर ख़ुरासान की ओर बढ़ रहा था| बैसाख का महीना था| कारवाँ सुस्ताने को| ऊँट खोल दिए गए| आग जलाकर देगें चढ़ाने की तैयारी हो रही थी कि जल्ली खेल वजीरियों ने हल्ला बोल दिया|”[89]

'कलिकथा वाया बाइपास' उपन्यास में शहर के कोलाहल से दूर गाँव के सुकून भरे परिवेश की तुलना करते हुए लेखिका ने बसंतलाल के माध्यम से गाँव की महत्ता का वर्णन कुछ इस तरह से किया हैं - "बसंतलाल हर साल आश्विन और कार्तिक के दो महीने गाँव जाकर रहता है| खेतों की ककड़ियां और मतीरे मुझे बुला लेते हैं| बाजारों के सट्टे जैसे मेरी बाट जोहते रहते है| जोहड़ तालाब पर दाल-बाटी की गोठ(पिकनिक) करने का जो आनंद है वह इस भीड़-भाड़ की नगरी में कहाँ|"[90]

आगे इसी उपन्यास में लेखिका छपनिया के अकाल का वर्णन कुछ इस तरह से करती हैं "बसंतलाल ने सरदार शहर की तरफ 'छपनीय के अकाल' की मार से भाग कर आनेवाले काफिलों को देखा है- बैलगाड़ी में जुते बैलों के मर जाने पर अपने सूखे हुए पंजरों पर सामान की पोटलियां लटकाए ठठरियां|"[91]

उपन्यास में एक प्रसंग के माध्यम से कोलकाता कलकत्ता कैसे बना का विस्तार से वर्णन किया गया है - "अंग्रेज ने तीन सौ साल पहले जब सूतानटी, गोविंदपुर और कलिकाता के तीन गांवों में से, जिनसे कलकत्ते का निर्माण हुआ, गंगा नदी के किनारे की सबसे ऊंची जगह को अपनी पहली नगरी बसने के लिए चुना, उस समय अधिकांश कलकत्ता दलदल और जंगल था| इनसे फोर्ट विलियम तक आनेवाली हवाओं के द्वारा मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियों से मरनेवाले लोगों की संख्या से घबराकर अंग्रेजों ने आसपास का दलदल और जंगल साफ करवाना शुरू किया| अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक कलकत्ता फोर्ट विलियम अढ़ाई सौ एकड़ के फैलाव के अंदर यूरोपियनों, आरमेनियनों और पुर्तगाली क्रिश्चियनों के रहने का घिरा हुआ स्थान बन गया था, जिसे 'गोर शहर' के रूप में जाना जाता था|"[92]

'मिलजुल मन' में ऐसे कई प्रसंग है जो वर्णनात्मक शैली में लिखे गए हैं| आगे एक प्रसंग में लेखिका भारत-चीन युद्ध के समय सामान्य जन-जीवन का वर्णन कुछ इस तरह करती हैं - "जब 1962 में चीन ने हमारे देश पर हमला किया, मेरी शादी नहीं हुई थी| फ़ोर्ड फाउन्डेशन की

ट्यूटरशिप छोड़ बाक़ायदा कालेज में लेक्चरार हो चुकी थी| 1960 से 61 तक इन्द्रपस्थ में, बाद में मुस्तकिल तौर पर, जानकी देवी में|”[93]

पचास के दशक में स्त्रियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था का वर्णन किया कुछ इस तरह से किया गया है - “पचास के दशक में दिल्ली में लड़कियों के तीन कॉलेज चोटी पर थे, इन्द्रप्रस्थ, लेडी इर्विन और मिरांडा हाउस| हाउस इसलिए कि कॉलेज की इमारत तब तक बनी न थी, हॉस्टल की बन चुकी थीं| क्लास जहां-तहां लग जातीं, मजबूरी का नाम शांतिनिकेतन के अंदाज में कभी घास पर, कभी गलियारे में|”[94]

‘पारिजात’ में लेखिका रूही के माध्यम से जीवन-दर्शन का वर्णन करते हुए लिखती हैं - “रुही लॉन में टहलती हुई सोच रही थी कि परंपरागत जीवन-दर्शन की जड़ें कितनी गहरी होती हैं| औरत-मर्द का साथ रहना हमारे समाज में ही नहीं, बल्कि विश्व में एक ज़रूरी मुद्दा है, चाहे उसके रुप अलग-अलग क्यों न हों| तलाक़ का प्रतिशत बढ़ने के बाद भी शादियाँ रुक नहीं रही हैं| बच्चे पैदा हो रहे हैं, चाहे आबादी बढ़े या फिर उनकी दुर्गत लगे|”[95]

‘पारिजात’ में रोहन की स्थिति और दशा को प्राकृतिक दृश्य के द्वारा उसे साकार कर बड़े ही खूबसूरती के साथ वर्णन किया है जो देखते ही बनता है| रोहन के मन को न बरसने वाले बादलों से जोड़ कर देखना लेखन की कलात्मकता में और निखार ला देता है - “काले बादलों के बीच से ज़र्द चेहरा जाने किसके साथ आँखमिचौली खेल रहा था| इक्का-दुक्का तारे इन्हीं बादलों के बीच से जब-तब दमक उठते थे| बारिश के आसार नज़र आने के बावजूद बादल बड़े ज़ब्त से काम ले रहे थे|”[96]

5.2.2 पूर्वदीप्ति शैली

“किसी पात्र के द्वारा विगत जीवन का जो दृश्य प्रस्तुत किया जाता है, उसे फ्लैशबैक कहते हैं| इसे स्मृति-दृश्य या विगताख्यान भी कहा जाता है|”[97] उपन्यास की रोचकता को बनाये रखने के लिए लेखक अपने लेखन में कई तरह की शैलियों का प्रयोग करते हैं| कृष्णा सोबती के उपन्यास में भी कई शैलियों के प्रयोग को देखा जा सकता है| ‘जिंदगीनामा’ में पूर्वदीप्ति शैली से संबंध ऐसे कई उदाहरण लेखिका ने प्रस्तुत किये हैं जो आगे वर्णित किया गया है| उपन्यास में शाहजी के माध्यम से ऐसे ही एक प्रसंग का प्रयोग लेखिका करती हैं, जिसमें शाहजी अपनी माँ को याद करते हुए कहते हैं- “यहीं जहाँ बैठी हो न शाहनी, सुबह प्रभाती माँ का चूड़ा छंकारने लगता| मैं और काशी पड़े-पड़े पसार में पहाड़े याद करते| बस,मथानी के थमते ही मक्खन-मिश्री को पहुँच जाते| बेबे मक्खन पर मिश्री-बादाम बुरकती, ऊपर से लस्सी का कटोरा पी तबेले में जा घोड़े खोल लेते| जी, कहाँ गईं वे सुहावनी घड़ियाँ और कहाँ गईं वे मीठी परछाईयाँ !”[98]

‘कलिकथा वाया बाइपास’ में किशोर बाबू की माँ उन्हें अपने ससुर को याद कर उनसे जुड़ी स्मृति साँझा करती हुई कहती हैं - “घोड़ो की बग्घी रोज शाम को रुनझुन करती ललित को सारे भिवानी में घुमा लाती| वह एक साल का था| तू तो पैदा भी नहीं हुआ था| बड़े बाबू रात को बग्घी में कम्बलें डालकर सर्दियों में दूर-दूर तक जाते| जो आदमी बिना ओढे सोया मिलता, उस पर एक कंबल डाल देते| ...मेरे ससुर जी यानी छोटे बाबू ने - लड़कियों के लिए कई स्कूल खोले| लेकिन समय एक जैसा कहां रहता है?”[99]

आगे पिता और भाई को याद करते हुए किशोर बाबू अपनी पत्नी के ललित भैया के बारे में पूछने पर अपनी कुछ पुरानी स्मृति को उनसे साझा करते हुए कहते हैं - “अम्माजी कहती थीं कि उनकी आंखें अम्माजी पर गई थीं, लेकिन उनका कलेजा अपने पिता की तरह बहुत कमजोर था| ...आज बरसों बाद उन्हें पिता का चेहरा याद आया- उस पिता का, जिसकी उनके जीवन में कोई भूमिका नहीं रही थी; सिवाय इसके कि वे माँ के पति थे और उनके जन्मदाता|”[100]

'पारिजात' में रोहन को पीछे के जीवन की कई स्मृतियां समय-समय याद आती रहती है| खासकर माँ जो अब नहीं रहीं और बेटा जो छिन चुका था, से जुड़ी बात उसे ज्यादा याद आती है| जब रोहन अपनी सजा पूरी कर घर वापस आता है तो दीवार पर टंगी अपनी और एलेसन की तस्वीर देख पुरानी बातें ताजा हो जाती है| आज पूरे डेढ़ साल बाद वह एलेसन को देख रहा था - "यह लो दीये| आज दीवाली है और तुम इस घर की होने वाली बहू| तुम्हारे दम से यह घर हमेशा रौशन रहेगा| माँ ने एलेसन को दीयों का पैकेट थमाते हुए कहा था| यह नया मकान तब बन रहा था| एलेसन ने उस दिन छह दिये जलाए थे|"[101]

जब रोहन अपने लेपटॉप में टेसू की तस्वीरों को देख रहा था तो अचानक उसके जन्म की बात को याद करता है कि कैसे माँ को उसने उसकी खबर बताई थी - "माँ, उठिए! बेटा पैदा हुआ है| उसकी उँगलियाँ बिलकुल आपकी तरह हैं और सर मुझे नाना की तरह लग रहे है| मैंने मोबाईल से ढेरों तस्वीरें ली हैं| ....आप सुन रही है न? फोन कट गया| रोहन ने यादों से निकल बेटे को अरसे बाद दूसरा ख़त लिखा|"[102]

5.2.3 वार्तालाप (संवाद) शैली

वार्तालाप शैली संवाद को गति प्रदान करने के लिए होती है जो पाठक को बांधकर रखती है| देखा जाए तो यह प्रवृत्ति भी लगभग सभी उपन्यासों में प्रयोग की जाती रही है| संवाद उपन्यास का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो कथा को तीक्ष्णता प्रदान करता है| वैसे ही मेरे शोध कार्य में लिए गए सभी उपन्यासों में यह शैली मौजूद है| कृष्णा जी अपनी रचनाओं में आंतरिक संवाद के लिए जानी जाती है| पत्रों के संवाद के स्तर से इनकी रचना और मुखर जान पड़ती है| कृष्णा जी के उपन्यास 'जिंदगीनामा' में इस शैली का काफी जगहों पर प्रयोग देखा गया है| आगे कुछ दीर्घ संवाद उदाहरण के तौर पर वर्णित है -

“चाची महरी : न घिये, ऐसे बगलोल मर्द को न रो| नाडे के दर-दर से छित्तर खाकर लौटेगा, यही तुम्हारे पास| मेरी बात पल्ले बांध ले|

माँ बीबी : चाची ! अबके थानेदार सलामत अली आये अपने ग्राम तो मेरी ओर से शाहजी को कहना, बात करे| क्या पता धमकाये-समस्यायें जना राह पर आये| बाग दिखाए और बदमाशों की मदद से तुम्हें दरिया पार पठाया ?”[103]

शाह-शाहनी का संवाद हो, चाहे चाची मेहरी के साथ एवं अन्य पात्रों का आपस का संवाद कुछ ऐसे ही दृश्य को सजाते हुए आगे बढ़ता है| कुछ और प्रसंग को आगे उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है - “चूल्हों से उठती उपलों की कच्ची गन्ध हर कोठे हर चौके को महकाने-लहकाने लगी !..... चिट्टी दूध चाँदनी में तुरकी बुलबुलों की डार पंख फैलाए अपनी लम्बी उड़ारियों पर|

लो एक और आया झुंड !

बग्ग है कि टोका ?

टोका है|”[104]

‘मिलजुल मन’ उपन्यास अंत तक मोगरा और लेखिका के बीच संवाद द्वारा ही रचा गया है| मोगरा के साथ वार्तालाप के माध्यम से लेखिका ने पूरी कथा गढ़ी है| उपन्यास के शुरू में ही लेखिका मोगरा से गुल की कहानी कहने को कहती है - “आगे की कहानी मोगरा सुनाएगी| सुनाओ न मोगरा, तुम बेहतर कहोगी|’ सो तो है, आखिर हमने पूरी उम्र साथ काटी| साथ कहाँ काटी? शादी अलग मर्दों से हुई कि नहीं? शादी के बाद कहाँ साथ रहीं तुम?”[105]

एक और उदाहरण से पात्रों के जीवंत रूप को देखा जा सकता है - “कौन कमला? पिताजी और मैंने एक साथ गुल की सहेलियों के नाम याद करते हुए पूछा| गुल ने चीख कर कहा, शटअप!

डॉक्टर को बुलाओ|"[106] इस तरह पूरा उपन्यास लेखिका का मोगरा के साथ स्थापित वार्तालाप को माध्यम बनाकर लिखा गया है, जो संवाद शैली का सुन्दर उदहारण प्रस्तुत करता है|

'पारिजात' में रोहन और निखिल के बीच का संवाद अक्सर सवाल-जवाब के रूप में ही दिखता है| रोहन के फोन करने पर निखिल दा की प्रतिक्रिया को आगे दिखाया गया है - "कैसे याद किया रोहन डियर? निखिल दा के स्वर में तीखा व्यंग्य था| सब कैसे हैं? रोहन ने पूछा| इतने दिनों बाद| निखिल का परिहास में डूबा स्वर गूंजा| निखिल दा! रोहन के स्वर में प्रतिरोध था| बोलो बच्चू! क्या पूछना चाहते हो? यही न कि प्रोफ़ेसर साहब कैसे हैं? सर बिलकुल ठीक हैं|"[107] पूरा उपन्यास ऐसे ही संवाद के रूप में लिखा गया है| इससे पात्रों के बीच की बातें पाठक के सामने और सजीव हो जाती है, और वह खुद को पात्रों के काफी करीब महसूस करता है|

5.2.4 पत्रात्मक शैली

'नाला सोपारा' उपन्यास कुल सत्रह पत्रों वाला एक पत्रात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है| अपने ही घर से निकाल दिए गए विनोद की मर्मांतक पीड़ा उसके अपनी बा को लिखे पत्रों के संकलन की तरह दिखने वाला उपन्यास है| बिनोद की पीड़ा इतनी गहरी है कि पाठक इन सभी पत्रों को एक उपन्यास की ही तरह देख पाता है| लेखन कौशल ने उपन्यास विधा में इस नए प्रयोग को बड़ी ही सहजता से स्वीकारता दिख रहा है| लेखिका चित्रा मुद्गल जी ने इसका प्रमाण भलीभांति दिया है| उदहारण के तौर पर कुछ प्रसंग का आगे वर्णन किया गया है -

पहला पत्र- "23.07.2011

3/4, मोहन बाबा नगर, बदरपुर, दिल्ली

मेरी बा !

इस संकरी गली के संकरे छोर पर पलस्तर उधड़ी दीवारों वाले घर की सींखचों वाली इकलौती खिड़की के पार, दिल्ली के मेघ बरस रहे हैं|......

बा, पगे लागूं

तेरा बिन्नी उर्फ बिनोद उर्फ बिमली|"[108]

कुछ पत्रों का जिक्र नासिरा शर्मा अपने उपन्यास 'पारिजात' में करती हुई नजर आती हैं| आगे कुछ पत्र उदहारण के तौर पर वर्णित है| निखिल दा के आये ख़त के जवाब में रोहन उन्हें एक ख़त लिखता है जिसका आगे वर्णन है - "निखिल दा का आमेरिका से ख़त आया था कि सर को सेमिनार के बाद कई अन्य विश्वविद्यालयों ने आमंत्रित किया है|.... अमेरिका में लगभग एक माह रुकने का इरादा है|..... आपके रहते मुझे बाबा की तरफ़ से चिंता नहीं है, मगर दिल टीसता है| उन्हें मेरा आदर देकर कहिएगा कि रूही ठीक है| रूही का दुःख मुझे जीना सिखा रहा है| उम्मीद है, हम दोनों बाबा के लौटने तक नॉर्मल हो जाएँगे|

आपका

रोहन,|"[109]

5.2.5 आत्मकथात्मक शैली

'धीरेन्द्र वर्मा' अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि - "आत्मकथा लेखक के अपने जीवन से संबद्ध वर्णन है| आत्मकथा के द्वारा अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और एक व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्त्व दिखलाया जाना संभव है|"[110]

मृदुला गर्ग जी ने उपन्यास 'मिलजुल मन' को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है| उपन्यास के प्रारंभिक पंक्तियों से ही आत्मकथात्मक शैली का पता चलता है जब लेखिका कहती हुई लिखती है कि - "कहानी कहने से पहले किरदार को नाम देना पड़ेगा| कायदा है तो नाम रख देते हैं गुलमोहर|"[111] उपन्यास की केन्द्रीय पात्र 'गुलमोहर' के माध्यम से मोगरा द्वारा लेखिका के साथ कथा वाचन उस समय की परिस्थिति, घटनाओं, दृश्यों एवं संवादों को जीवन्तता के साथ व्यक्त किया गया है| जीवन के प्रतिकूल और अनुकूल परिस्थिति से गुजरता हुआ यह उपन्यास संवेदना के हर पक्ष को बड़ी ही बारीकी से प्रस्तुत करता है| आगे एक और प्रसंग के द्वारा इस शैली की प्रमाणिकता को देखा जा सकता है, जहाँ लेखिका अपने अन्य उपन्यास 'चित्तकोबरा' की चर्चा करती हैं| 'चित्तकोबरा' को लेकर हुई बेकार और बेमतलब की आलोचना से लेखिका बहुत आहत हुई थी जिसकी चर्चा वो इस उपन्यास में कुछ इस तरह करती हुई नजर आती हैं - "ज़माना गुज़रा एक पाक-साफ़ उपन्यास लिखा था, 'चित्तकोबरा' नाम से| दो निहायत पाकदिल बंदों का, मिया-बीबी के अलावा, दूसरों से प्यार था| इसी पर अपने ज़हीन आलोचकों ने इतना दिल जलाया कि क्या बयान करें| पता नहीं वैसा हसीन प्यार न कर पाने की तकलीफ़ और हसद थी या कुछ और| ...मर्दानगी साबित करने की छूट मैंने नहीं दी, इसलिए इंसाफपसंद हिंदीवरों ने मुझे गलती की सज़ा दी|"[112]

'कलिकथा : वाया बाइपास' के आवरण पृष्ठ में लेखिका ने खुद स्वीकार किया है कि यह उपन्यास कई शैलीयों में लिखा गया है - "एक साथ कई शैलियों में लिखा गया यह उपन्यास अलग-अलग देश-काल में आगे-पीछे चलता पाठकों को ऐसी यात्रा के लिए आमंत्रित करता है, जिसमें वे चौंकने, रास्ता खोने और फिर उसे खोज पाने के आनंद का अनुभव करें|"[113]

यह उपन्यास आत्मकथा के पैमाने पर उतना ही खड़ा उतरता है जितना कि कहानी में दो कैरेट की मिलावट करने की लेखिका को छूट है| कहानी के बीच में लेखिका की उपस्थिति भी इतनी ही है| इस सन्दर्भ में लेखिका लिखती हैं - "यह कथा किशोर बाबू की कथा है और कथा-लेखक की उपस्थिति इसमें इसनी ही होगी जितनी कि खांटी शुद्ध किस्सागोई में होनी होगी|"[114]

आत्मकथात्मक लेखन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए धीरेन्द्र वर्मा लिखते है कि - "एक प्रकार के आत्मकथात्मक साहित्य का उद्देश्य होता है कि- आत्म-निर्माण, आत्म-परीक्षण या आत्म-समर्थन, अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करने का मोह या जटिल विश्व के उलझावों में अपने आप को अन्वेषित करने का सात्त्विक प्रयास| ...तथा दूसरा उद्देश्य यह भी है कि लेखक के अनुभवों का लाभ अन्य लोग भी उठा सकें|"[115] ऊपर उद्धृत उपन्यासों में इन दोनों उद्देश्यों को बराबर से देखा जा सकता है|

अतः सभी लेखिकाओं के लेखन में भाषागत संबंधी विभिन्न पक्षों के विश्लेषण के पश्चात् इतना कहा जा सकता है कि इन सबका लेखन बहुभाषा का धनी है| इन सबके लेखन पर समय के प्रभाव को इनकी भाषा के माध्यम से समझा जा सकता है| भाषा के विभिन्न आयामों के साथ-साथ इनके गद्य में पद्य का समावेश लेखन की निपुणता का परिचायक है|

सन्दर्भ सूची :

1. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-600

2. कृष्णा सोबती, सोबती एक सोहबत, पृष्ठ-375

3. वही, पृष्ठ-374

4. वही, पृष्ठ-374

5. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-466

6. वही, पृष्ठ-179

7. वही, पृष्ठ-183

8. वही, पृष्ठ-864

9. डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त, उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प, पृष्ठ-164

10. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, पृष्ठ-72

11. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-45

12. वही, पृष्ठ-139

13. अलका सरावगी, कलिकथा : वाया बाइपास, पृष्ठ-176

14. वही, पृष्ठ-175

15. वही, पृष्ठ-157

16. वही, पृष्ठ-153

17. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ-43

18. वही, पृष्ठ-47

19. वही, पृष्ठ-48

20. वही, पृष्ठ-110

21. वही, पृष्ठ-148

22. वही, पृष्ठ-237

23. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-10

24. वही, पृष्ठ-61

25. वही, पृष्ठ-53

26. चित्रा मुद्‌गल, नाला सोपारा, पृष्ठ-48

27. वही, पृष्ठ-49

28. वही, पृष्ठ-49

29. वही, पृष्ठ-58

30. बाबू गुलाब राय, काव्य के रूप, पृष्ठ-204

31. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-754

32. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-66

33. वही, पृष्ठ-77

34. वही, पृष्ठ-153

35. वही, पृष्ठ-233

36. वही, पृष्ठ-233

37. वही, पृष्ठ-273

38. अलका सरावगी, कलिकथा : वाया बाइपास, पृष्ठ-30

39. वही, पृष्ठ-36

40. वही, पृष्ठ-96

41. वही, पृष्ठ-99

42. वही, पृष्ठ-172

43. वही, पृष्ठ-206

44. वही, पृष्ठ-40

45. वही, पृष्ठ-68

46. वही, पृष्ठ-187

47. वही, पृष्ठ-199

48. वही, पृष्ठ-202

49. वही, पृष्ठ-211

50. वही, पृष्ठ-72

51. वही, पृष्ठ-207

52. वही, पृष्ठ-267

53. वही, पृष्ठ-43

54. वही, पृष्ठ-52

55. वही, पृष्ठ-116

56. वही, पृष्ठ-243

57. वही, पृष्ठ-233

58. वही, पृष्ठ-122

59. वही, पृष्ठ-314

60. वही, पृष्ठ-22

61. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-56

62. वही, पृष्ठ-54

63. वही, पृष्ठ-12

64. वही, पृष्ठ-11

65. वही, पृष्ठ-111

66. चित्रा मुद्गल, पृष्ठ-14

67. वही, पृष्ठ-58

68. साक्षात्कार, पत्रिका, पृष्ठ-

69. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-

70. वही, पृष्ठ-93

71. वही, पृष्ठ-62

72. वही, पृष्ठ-34

73. वही, पृष्ठ-35

74. अलका सरावगी, कलिकथा : वाया बाइपास, पृष्ठ-28

75. वही, पृष्ठ-119

76. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-16

77. वही, पृष्ठ-428

78. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-755

79. चित्रा मुद्गल, नाला सोपारा, पृष्ठ-

80. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-837

81. वही, पृष्ठ-837

82. भोलानाथ तिवारी, शैली विज्ञान, पृष्ठ-15

83. वही, पृष्ठ-15

84. वही, पृष्ठ-20

85. वही, पृष्ठ-22

86. वही, पृष्ठ-197

87. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी का गद्य-साहित्य, पृष्ठ-800

88. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-20

89. वही, पृष्ठ-132

90. अलका सरावगी, कलिकथा : वाया बाइपास, पृष्ठ-34

91. वही, पृष्ठ-36

92. वही, पृष्ठ-98

93. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ-273

94. वही, पृष्ठ-111

95. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-452

96. वही, पृष्ठ-53

97. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-550

98. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-28

99. अलका सरावगी, कलिकथा : वाया बाइपास, पृष्ठ-25

100. वही, पृष्ठ-63

101. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-9

102. वही, पृष्ठ-432

103. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, पृष्ठ-49

104. वही, पृष्ठ-17

105. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ-12

106. वही, पृष्ठ-102

107. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-367

108. चित्रा मुद्‌गल, नाला सोपारा, पृष्ठ-15

109. नासिरा शर्मा, पारिजात, पृष्ठ-57

110. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-98

111. मृदुला गर्ग, मिलजुल मन, पृष्ठ-11

112. वही, पृष्ठ-36

113. अलका सरावगी, कलिकथा वाया बाइपास, पृष्ठ-आवरण से

114. वही, पृष्ठ-10

115. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश(भाग-1), पृष्ठ-98